विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: -12-01-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-पञ्चदश: पाठनाम नीतिश्लोका:

श्लोक

साहित्य- संगीत – कला विहीन:,
साक्षात् पशु: पुच्छ विषाणहीन:।
तृणं न खादन्नपि जीवमान:,
तद्भागधेयं परमं पशूनाम।।1।।

शब्दार्था:

पुच्छविषाणहीन: -पूंछ और सींग से रहित

भागधेयम् – भाग्य , जीवमान: - जीवित

तृणम् – घास (तिनका), परमं – बढकर

खादन्नपि – खाता हुआ भी

अर्थ

साहित्य- संगीत -कला से रहित (व्यक्ति)
पूंछ और सींग से रहित(वह)साक्षात् पशु है,
घास नहीं खाता हुआ भी जीवित है,उससे
बढकर भाग्य तो पशुओं का है।